स्व. जगन्नाथ दास रत्नाकर के विनय के छंद

('सरस्वती', मार्च १९२८ में प्रकाशित)

फिकिर नहीं है कछु आपनी विसेस हमैं,
प्रकृति हमारी अहसान चाहती नहीं।
कहै रतनाकर पै रावरे कहावत हैं,
हेठी या तिहारी तातैं नैकु सहती नहीं॥
तातैं करि साहस पुकारि कै चिताए देत,
रावरी कृपा जो नाथ हाथ गहती नहीं॥
तो पै करुना निधान सान सोम बंसिनि की,
आन भानु अंसिनि की आज रहती नहीं॥ १॥

अनुचित उचित विचार चित्त सौ कै दूरि,
रावरीं कृपा को भूरि लाहू लहते सही।
कहै रतनाकर अमर्द मुख चंद चारु,
देखत अनंद सौं, घटीक रहते सही॥
रौकिबौ रिसैबौं भौंह विकट चढ़ैगों नाथ,
हाथ झट कैबौं रोपि माथ सहते सही।
धीर वहि जात्यौ नैन नीर मैं तिहारे जौन,
तो पै चीर पकरि कछुक कहते सही॥ २॥

सुमिरि तुम्हैं जो हियैं द्रवत न नैकुँ हाय,
स्रवत न आँस लै उसाँस रस-वारौ है।
कहै रतनाकर पै नित धन धाम बाम,
काम ही के काम कौ पसारत पसारौ है॥
ऐसे हम हूते जो नकारनि कृपा कै वारि,
सींचै घनस्याम तौ तौ विरद सँभारौ है।
भक्तनि कै ताप टारिबै मैं ना तिहारो नाथ,
तिनके हियैं तै निज धाम ही तिहारौ है॥ ३॥

होत्यौ मन मोहि मन राखिबौ हमारौ जौ न,
तो पै मन मानौ एतौ करते दुलारौ ना।
कहै रतनाकर विचारि निरधार यहै,
ढीठ ह्वै उचारे तातैं बिलग विचारौं ना॥
आपनौई जानि कृपा कोप जो करौ तो करौ,
आन जानि धारौ तौ कृपा हु रंच धारौं ना।
कै तौ गहि हाथ विश्व बाहिर निकारौ नाथ,
कै तौ विश्वनाथ निज नाथता बिसारौ ना॥ ४॥

गंग की न धार जो सिधारि जटाजूटनि मैं,
भूप बिनती बिन धधाई धरा धै है ना।
कहै रतनाकर तरंग भंग हू की नाहिं,
जो निज उमंग और अंग दरसैहै ना॥
यह करुना हु की कदंबिनी न नाथ सुनौ,
ताप विनहूँ जो द्रवि आप झर लैहै ना।
यह तौ कृपा की धुनि धार है अपार संभु,
मानस ढरारे मैं तिहारे रुकि रैहै ना॥ ५॥

दुखहूँ परै पै ना पुकारत गुपाल तुम्हैं,
कबहु उचारत उसाँस भरि राधा ना।
कहै रतनाकर न प्रेम अवराधै रंच,
नेम ब्रत संजमहूँ साधैं करि साधना॥
याही भावना मैं रहैं भभरि भुलाने सदा,
उभरि करेजैं पर करुना अगाधा ना।
अकथ अनंद जो अकारन कृपा की नाथ,
हाथ करिबै मैं तुम्हें ताहि परै बाधा ना॥ ६॥

कौन की बिनै पै जग जनम कियो है नाथ,
कौन की बिनै पै मंजु मानुष बनायौ है।
कहै रतनाकर त्यों कौन के कहे पै कहौ,
चित सुख चाव कौ सुभाव उपजायौ है॥
एतौ सब कीन्यौ आपनी ही मनसा सौं आप,
काहू के अलाप औ न चाप उकसायौ है।
अब क्यों कृपाल कृपा ढार ढरिबै में बार,
चाहत कछूक हाय हम सौं कहायौ है॥ ७॥

मींजि मन मारे फिरैं कब लौं तिहारे दास,
आस बिन पोखै हाय कब लौं पुषी रहैं॥
कहै रतनाकर रचाए बिना रंचक ह्वै,
तोष की कहाँ पढ़ि पद्धति घुषी रहै॥
रावरे रुचिर करुनानंद सकेलन कौ,
तुम ही विचारौं जन कब लौं दु:खी रहै।
तातैं बिना कारन कृपा को उदगारनि मैं,
तुमहूँ अनंद लहौं हमहूँ सुखी रहैं॥ ८॥

□